सही समझ व सही प्रयत्न :

योगवासिष्ठ से लिए गए उद्धरण

३

जैसी समझ वैसा ही मन, क्योंकि समझ ही मन है;
फिर भी महाप्रयास से इसकी दिशा परिवर्तित की जा सकती है।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

योगवासिष्ठ; स्वामी वेंकटेशानन्द, *The Supreme Yoga: Yoga Vasishtha* [दिल्ली, भारत : मोतीलाल बनारसीदास, २०१०] पृ. ५२।